बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)
Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: /2024) Year: 5th

जिला : बाँदा	जारी करने की तिथि : 19.06.2024

क्र0 सं0	विभाग	सलाह
1.	शाक–भाजी	➢ कद्दू वर्गीय सब्जियों कद्दू, खीरा, करेला, तरोई, लौकी आदि लोबिया, मिर्च, बैगन, टमाटर, तथा भिंडी के खेत में सूखी घास का पलवाड़ प्रयोग करें। ➢ फसलों में फल छेदक, तना छेदक, माहू जैसे कीड़ों का प्रकोप हो सकता है अतः विशेषज्ञ के अनुसंशा के अनुसार प्रबंधन करें। ➢ गर्म हवाओं से सुरक्षित रखने के लिए खड़ी फसलों में समुचित जल एवं खरपतवार प्रबंधन करें।
2.	शस्य प्रबंधन एवं मृदा प्रबधंन	➢ सही समय पर उपयुक्त बिधि से बुवाई, उपपलब्ध भूमि एवं जलवायु तथा संसाधनों के अनुसार फसलों एवं उनकी प्रमाणित किस्मों का चयन, मृदा परीक्षण के आधार पर उचित समय पर पोषक तत्वों का इस्तेमाल, फसल की क्रांतिक अवस्थाओं पर सिंचाई, आवश्यकतानुसार जलनिकास, पौध संरक्षण के आवश्यक उपाय के अलावा समय पर कटाई, गहाई और उपज का सुरक्षित भण्डारण तथा विपणन बेहद जरूरी है। ➢ जून माह का अंतिम पखवाड़ा किसान भाइयों एवं आम जनजीवन में नई आशा और उमंग लेकर आता है क्योंकि आसमान में बादल छा जाने से ग्रीष्म की तपन कम होने लगती है! ➢ खरीफ फसलों के लिए खेत की तैयारी, भूमि के प्रकार और आवश्यकता के अनुरूप फसलों और उनकी उन्नत किस्म के बीजों का चयन करते हुए सही समय पर बुआई के लिए किसान भाइयों को चौकन्ना होकर योजनावद्ध तरीके से कार्य करना होगा तभी उन्हें उनके कठिन परिश्रम और लागत का उचित प्रतिफल प्राप्त हो सकेगा।

		➢ मोटे अनाज जैसे बाजरा की मानसून सत्र की पहली अच्छी वर्षा पर बुवाई शुरू कर दें। ➢ बीज की मात्रा 8–10 किग्राण् बीज प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें। फसल की बुवाई कतारों करें तथा बीज बोने की गहराई 4 सेमी रखना चाहिए । ➢ इस फसल की बुवाई माह के अन्तिम सप्ताह से शुरू करें तथा जुलाई के प्रथम सप्ताह तक पूरी कर लें। बोयाई हमेशा कतारों में कुंड एवं मेड विधि से करना लाभदायक होता है। अच्छे जलनिकास वाली हलकी दोमट भूमि इस फसल के लिए उपयुक्त होता है। ➢ माह के अन्तिम सप्ताह में पर्याप्त नमीं की दशा में अरहर की बुवाई करें । प्रति हैक्टेयर 18–20 किग्राण् बीज पर्याप्त होता है। बुवाई कतारों में 45–60 सेमी की दूरी पर करें। पौधों के मध्य 15–20 सेमी् का फासला रखें। मूंगए उड़द की बुवाई इस माह संपन्न करें। इन फसलों की बुआई हेतु प्रति हैक्टेयर 18.20 किग्रा बीज की आवश्यकता होती है। बुवाई कतारों में 30 सेमी् की दूरी पर करें। बुवाई के समय 20–25 किग्रा नत्रजन, 40–50 किग्रा फास्फोरस तथा 15...20 किग्रा0 पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से कतारों में दे । जलनिकास का उचित प्रबंधन अवश्य करें। ➢ धान की सीधी बोआई– जिन किसान भाइओं के पास सिचाईं के साधन खेत समतल व सीडड्रिल की व्यवस्था है वह किसान भाई सीधी बोआई कर सकते है। ➢ किसान भाई धान की सीधी बोआई जून के महीने में कर सकते हैं। इससे किसानों को नर्सरी लगाने व रोपाई में मजदूर के प्रयोग करने में लगात की कमी होगी। ➢ धान की बुआई खेत में पलेवा करके भी कर सकते है अथवा सूखी विधि में भी बुआई करके सिचाईं कर सकते है। प्रमाणित बीज को किसी विश्वसनीय संस्थान से खरीदें व उपचारित कर लें। ➢ बोआई में उवर्रक 120:60:40 (एन.पी.के.) किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। इसके लिये 66 किलोग्राम एम.ओ.पी. को बुआई से पहले खेत में बिखेर कर जताई करें। संकर धान का बीज 15 से 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर व सामान्य बासमती का धान का बीज 25–30 किलोग्राम / हेक्टेयर की दर से सीडड्रिल के माध्यम से बुआई करें। सीड

		ड्रिल में 130 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से डी.ए.पी. को सीडड्रिल से दें। ➢ बुआई से पहले सीडड्रिल को कैलिब्रेट कर लें। धान की बुआई 2–3 सेमी0 की गहराई पर करें। ➢ बुआई के बाद अंकुरणपूर्व खरपतवारनाशी पेन्डीमिथाइलीन 3.0 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से स्प्रे करें अथवा 2.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से प्रेटिलाक्लोर (सोफिट) का स्प्रे करें। ➢ वर्षा ऋतु के प्रारम्भ हो जाने पर धान की पौध लगाने का सही समय 15 जून से 30 जून तक है। विलम्ब करने पर रबी की फसलों की बुआई में देरी होगी। अतः सभी किसान जो धान की फसल बोना चाहते है, 15 जुलाई तक नर्सरी लगा लें। ➢ उत्तम उपज वाली किस्म का चुनाव करें व इसे प्रमाणित संस्थाओं से ही खरीदें। बीज को बुआई से एक दिन पहले फफूंदीनाशक व कीटनाशक से उपचारित कर लें। ➢ नर्सरी का क्षेत्र सिंचाई के पास वाला चुनाव करें। ➢ 300 से 400 वर्गमीटर का क्षेत्र एक एकड़ में धान की रोपाई के लिये उचित होता है। इसे जुताई करके तैयार कर लें। इसमें 2 कुन्टल गोबर की खाद बुआई से 20–25 दिन पहले डालें व जुताई कर अच्छे से खेत में मिला दें। ➢ 20–40 ग्राम/वर्ग मीटर (10–16 किलो0/300–400 वर्ग मीटर) के हिसाब से बीज की मात्रा का प्रयोग करें। ➢ अंकुरित बीज को नर्सरी क्षेत्र में बिखेर दें तथा पक्षिओं से बचाव करें। ➢ हल्की सिचाईं लगायें तथा नर्सरी क्षेत्र में नमी बनाये रखे। ➢ आवश्यकतानुसार खरपतवारनाशी व कीटनाशक का प्रयोग करें। ➢ रोपाई से पहले अगर नर्सरी में हल्के पीले (कागज की तरह सफेद लक्षण) आयें तो 0.5 प्रतिशत फेरस सल्फेट का उपयोग करें। ➢ 20–25 दिन पुरानी या 14 सेमी0 लम्बी पौध का प्रयोग रोपाई के लिये करें।
3.	पशुपालन प्रबंधन	**ग्रीष्म काल में मुर्गीपालकों हेतु कुछ आवश्यक सावधानियांः**

		➢ गर्मी में मुर्गी पालन करने वालों के लिए आवश्यक है कि तापमान की तेजी से मुर्गियों को बचाया जाए, क्योंकि गर्मी अधिक बढ़ने से मुर्गियों की मृत्यु दर बढ़ सकती है। ➢ गर्मी से होने वाले स्ट्रेस को कम करने के लिए चूजों के फार्म पर पहुँचते ही एलेक्ट्रल पाउडर व ग्लूकोस वाला पानी पिलायें, चूजों को 5–6 घंटे तक यही पानी पीने को दें। ➢ पानी के बर्तन उचित संख्या में लगायें –100 चूजों के लिए 3–4 बर्तन। ➢ मुर्गी के शेड को हवादार बनायें रखें. पर्दों को दिन–रात दोनों समय खुला रखें। ➢ मुर्गियों को 1– 1.5 किलो होते ही बिक्री शुरू कर दें। ➢ इसके अलावा, मुर्गियों को दिए जाने वाले दाने को गीला कर सकते हैं। गीला दाना ठंडा होगा जिसका मुर्गियां ज्यादा सेवन करेगी। परंतु ध्यान रखें कि गीला किया दाना शाम तक खत्म हो जाए वर्ना उसमें बदबू आ सकती है। दाने की बोरी को कभी भी गीला न करें। ➢ फार्म में बहुत ज्यादा मुर्गियां नहीं पालें हो सके तो शेड के क्षमता से 20 प्रतिशत कम मुर्गियां रखें। ➢ मुर्गियों की छत का गर्मी से बचाने के लिए छत पर घास व पुआल आदि को डाल सकते हैं. या छत पर सफेदी करवा सकते हैं. सफेद रंग की सफेदी से छत ठंडी रहती है। ➢ चूजों को रखने से पहले शेड को अच्छे से साफ करें और शेड के अंदर–बाहर चूना का छिड़काव करें। ➢ मुर्गियों में अधिक मृत्यु दर होने से मुर्गीपालकों को भारी वित्तीय हानि उठानी पड़ सकती है। गर्मी के मौसम में थोड़ी सावधानी से मुर्गियों को तेज गर्मी के प्रकोप से बचाया जा सकता है और अधिक से अधिक लाभ कमाया जा सकता है।
4.	कीट–प्रबंधन	➢ भिण्डी / लोबिया / कद्दू वर्गीय सब्जियों आदि में पीत शिरा मोजैक / पत्ती मरोड़ विषाणु रोग के वाहक कीट के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्ल्यू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी मे घोलकर 15 दिन के अंतराल पर आवश्यकता अनुसार छिड़काव करें। ➢ कद्दू वर्गीय सब्जियों में फल मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु क्षतिग्रस्त फलों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए। एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये। क्यू ल्योर + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने घोल में 5 X 5 X 1.5 मिमी0 के प्लाई वुड के टुकड़ों को एक सप्ताह तक शोधित कर कर ट्रैप लगाना चाहिये। ➢ टमाटर में फल छेदक एवं बैंगन में कलंगी एवं फल बेधक कीट से बचाव हेतु ग्रसित फलों तथा प्रभावित कलंगी को इकट्ठा कर नष्ट कर दें। नियंत्रण

		हेतु फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। ➢ दीमक के जैविक नियंत्रण हेतु ब्यूवेरिया वैसियाना 1.15 प्रतिशत बायोपेस्टीसाइड की 2.5 किग्रा0 मात्रा को 60–70 किग्रा0 गोबर की खाद में मिलाकर प्रति हे0 की दर से भूमि शोधन करना चाहिये। ➢ आम में फल मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु मिथाइल यूजीनाल + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने मे घोल में 5 X 5 X 1.5 मिमी0 के प्लाई वुड के टुकड़ों को शोधित कर ट्रैप लगाना चाहिये। 12–15 ट्रैप प्रति हे0 की दर से प्रयोग करें।
5.	पादप राग प्रबंधन	➢ Not received
6.	बागवानी प्रबंधन	**जून माह के प्रमुख कार्य** जून माह में अधिक गर्मी एवं शुष्क होने के कारण काफी सावधानियां अपनानी चाहिए। इस माह में फलों का अधिक गिरना, छालजलन, पत्तियों का झुलसा तथा सिंचाई की भी अधिक आवश्यकता होती है। यहां तक कि छोटे पौधों का झुलसा भी अक्सर देखा गया है। इस कारणवष बाग मालिकों को पौधों में सुचारू नमी बनाने की आवश्यकता है। भूमि की नमी को बनाये रखने के लिए भी आवश्यक कदम उठाने की जरूरत है। खरपतवार को भी निराई – गुड़ाई द्वारा या खरपतवारनाशी दवाओं द्वारा नियंत्रण में रखना चाहिये। नये बाग लगाने की योजना तथा रेखांकन कार्य भी इसी माह में करने की आवश्यकता है ऐसी परिस्थितियों में बताये जा रहे सुझावों के अनुरूप ही कार्य करें।नये बाग के रोपण हेतु प्रति गड्ढा 30–40 किग्रा सड़ी गोबर की खाद, एक किग्रा नीम की खली तथा आधी गड्ढे से निकली मिट्टी मिलाकर भरें। गड्ढे को जमीन से 15–20 सेमी. ऊँचाई तक भरना चाहिए। केला की रोपाई के लिए उपयुक्त समय है। रोपण हेतु तीन माह पुरानी, तलवारनुमा, स्वस्थ व रोगमुक्त पुत्ती का ही प्रयोग करें। पुत्तीयों के ऊपरी तानें की कंद से 25 से 30 सेंटीमीटर पर काट दें। रोपाई से पूर्व सभी पुत्तीयों को 1 ग्राम बविस्टीन प्रति लीटर पानी के घोल में उपचारित कर ले। रोपाई के समय केवल कंद भाग को ही मिट्टी में दबाए तथा रोपाई के बाद सिंचाई कर दें। पपीते में सितंबर–अक्टूबर में लगाए गए पौधों में अतिरिक्त नर पौधों को निकाल दे। पुराने बागों में इंटरक्रॉपिंग के रूप में हल्दी व अदरक बोआई करें। बेर में कटाई–छटाई का कार्य कर ले। आम में ग्राफ्टिंग का कार्य करें। **तेज गर्मी से बचाव :–** तेज गर्मी से बचने के लिए पौधों के मुख्य तने पर चूने तथा नीले थोथे का लेप करें। घोल बनाने के लिए कापर सल्फेट 2.5 किलोग्राम, बुझा हुआ चूना 5 किलोग्राम, सरेश 1/2 किलोग्राम तथा पानी 30 लीटर प्रयोग करें। यदि बाग में जंतर या ढैंचा है तो पानी देकर इसकी बढ़वार बढ़ा दें।

		सिंचाई व्यवस्था :– अत्यधिक गर्मी के कारण पानी की मात्रा को पौधो में बनाए रखने के लिये सिंचाई पंद्रह दिन के अन्तराल पर अवश्य दें। यदि बूंद–बंदू सिंचाई द्वारा बाग चलाया जा रहा है तो उसकी उम्र के हिसाब में निम्नलिखित मात्रा में पानी दे। ऐसा करने से फलों का गिरना भी रूक जाएगा। बाग में पानी हमेशा शाम होने के बाद लगायें तथा गलत दिशा में बह रहे पानी से होने वाले नुकसान का पूरा ध्यान रखें। पानी की उपलब्धता के अनुरूप ही बाग का विस्तार किया जाना चाहिये। **मलचिंग द्वारा भूमि जल संरक्षण :–** भूमि को पॉलीथिन शीट द्वारा, पराली द्वारा, चने के नीरे द्वारा या भुई द्वारा ढकने से भूमि जल को वाष्पीकृत होने से बचाया जा सकता है। परन्तु ध्यान रहे कि पराली वगैरह से ढकने पर सूख होने के कारण इसमें आग लगने या दीमक के आने की संभावना रहती है। अतः इससे बचने के लिए सावधानी बरतें। **बाग में हल जोतना :–** जून माह में बाग की भूमि को जोतना अतिआवश्यक है ताकि खरपतवारों का पूरी तरह से नष्ट किया जा सके तथा भूमि की ऊपरी परत ढीली करने पर यह मल्च का काम करें। ऐसा करने पर कीट व्याधि पर भी नियंत्रण पाया जा सकता है। नींबू प्रजाति के बागो में खरपतवार नियंत्रण के लिए खरपतवारनाशी दवाओं का प्रयोग भी किया जा सकता है। **नर्सरी (पौधशाला) के कार्य :–** 1. सिंगल स्टेम ट्रेनिंग :– नींबू प्रजाति में खट्टी को सधाई देने के लिए सभी फुटान को हटा दें। (षीर्ष फुटान को छोड़कर) ताकि बरसात के मौसम में इस पर बडिंग या ग्राफिटिंग की जा सकें। 2. बारामासी नींबू की 2.5 सेमी हार्डवुड टहनियों को पांच से आठ इन्च लम्बी काटकर इस माह के अंत में लगा दें। 3. फालसे का बीज भी इस माह के दूसरे पखवाड़े में क्यारियों में बीज दें। 4. पौधशाला में हर दूसरी सिंचाई के उपरान्त निराई–गुड़ाई अवश्य करें। 5. आम और अमरूद के पौधों में बरसात में इनार्चिंग कराने के लिए बीजू पोधों को गमले में लगा देवें ताकि एक से डेढ महीने बाद इन पौधों पर पैबन्दी (प्रवर्धन) किया जा सके। फल पौधों पर 0.6 प्रतिषत बोरक्स का छिड़काव करें। 6. बेर में 15 जून तक पौधों की वार्षिक कॉंट–छॉंट करावें। गमले की सफाई कराकर गोबर की खाद एवं उर्वरक देकर सिंचाई करें प्रति पेड़ लगभग 60–80 किलोग्राम गोबर की सड़ी खाद डाले। सुपर 100 ग्राम से 500 ग्राम (पौधे की आयु) के हिसाब से दे। 7. नीम्बूवर्गीय फलः फलदार पदों में नाईट्रोजन व पोटाश की दूसरी मात्र का प्रयोग करें.।

		8. अंगूर की फसल में पक्के हुए गुच्छों को तुड़ाई कराकर प्रत्येक गुच्छे में से सडे फल तथा कच्चे फल की कॉंट छांट–कर बाजार में बेचें। नई बेल में 80–90 ग्राम यूरिया प्रति बेल हर दूसरी सिंचाई पर देते रहे व फालतू बढ़वार रोकते रहे। 9. अमरूद के नये पौधें को गर्मी व लू से बचाये और सिंचाई अवष्य करें। 10. आडू के नये पौधे के तने के साथ मिट्टी अवष्य चढ़ायें। 11. बागो में सिंचाई नियमित रूप से करते रहे। छोटे पौधों को गर्मी व लू से बचायें।
7.	वानिकी प्रबंधन	➢ गर्म मौसम को ध्यान में रखते हुए वानिकी पौधशाला के नर्सरी पौध की सुरक्षा एवं समुचित विकास हेतु छाया की उचित व्यवस्था तथा सायंकाल नर्सरी में नियमित सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। ➢ कृषि वानिकी प्रणाली के तहत लगाए गए दो–पांच साल के पेड़ों को पलवार करना (घास–पात से ढकना) की सलाह दी जाती है ताकि मिट्टी में नमी बरकरार रहे। ➢ ग्रीष्म लहर के दौरान पेड़ों की अनावश्यक छंटाई या प्रत्यारोपण से बचें। ➢ नर्सरी (पॉलिथीन) थैलियों में भरे जाने वाले पॉटिंग मिश्रण में खाद / कंपोस्ट खाद, बालू व छनी हुई मिट्टी का अनुपात क्रमशः 1:2:3 रखें, यदि चिकनी मिट्टी की मात्रा अधिक है तो उसमें बालू रेत की मात्रा को आवश्यकता अनुसार बढ़ा दे। ➢ जो किसान भाई चिरौंजी/चार, तेंदू और सलई गोंद नर्सरी पौधों को उगाने में रुचि रखते हैं, तो यह सही समय वनक्षेत्र से पके फलों को इकट्ठा करने का है।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय 6. डॉ विवेक सिंह	7. डॉ मयंक दुबे 8. डॉ दिनेश गुप्ता 9. डॉ पंकज कुमार ओझा 10. डॉ सुभाष चंद्र सिंह